हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर कांपे।
रोग दोष जाके निकट न झांके।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खायी,
जात पवनसुत बार न लायी॥
लंका जारि असुर सब मारे,
सियारामजी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि संजीवन प्राण उबारे॥
पैठी पताल तोरि जमकारे,
अहिरावण की भुजा उखाड़े॥
बाएं भुजा असुर दल मारे,
दाहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर-नर-मुनि जन आरती उतारे,
जय जय जय हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई॥
जो हनुमानजी की आरती गावे,
बसी बैकुंठ अमर पद पावे॥
लंका विध्वंस किये रघुराई,
तुलसीदास स्वामी आरती गाई॥

आरती की जय हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जय जय जय हनुमान गोसाईं,
कृपा करहु राजा राम चंद्र की जय॥